

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री दुर्गा नमः ॥

श्री अर्गला स्तोत्र

Argala Stotram — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: ऋषि मार्कण्डेय (मार्कण्डेय पुराण) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

विनियोग

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता,
श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः॥
ॐ नमश्चण्डिकायै॥
मार्कण्डेय उवाच

भावार्थ: इस विनियोग वाक्य में बताया गया है कि अर्गला स्तोत्र के ऋषि साक्षात् भगवान विष्णु हैं, छंद अनुष्टुप् है और अधिष्ठात्री देवी स्वयं महालक्ष्मी हैं; जगदम्बा को प्रसन्न करने तथा दुर्गा सप्तशती पाठ के अंगस्वरूप इसका जप किया जाता है। सबसे पहले माँ चण्डिका को नमन करके महर्षि मार्कण्डेय इस पावन स्तुति का वर्णन आरंभ करते हैं।

श्लोक १

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥ १॥

भावार्थ: हे माता! आप ही जयन्ती (विजय देने वाली), मंगला, काली, भद्रकाली और कपालिनी हैं; आप ही दुर्गा, क्षमा, शिवा और सृष्टि का पालन करने वाली धात्री हैं — आप ही यज्ञ की स्वाहा और पितरों को तृप्त करने वाली स्वधा भी हैं। आपके इन समस्त पावन नामों व रूपों को मेरा बारंबार नमस्कार है।

श्लोक २

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥ २॥

भावार्थ: हे माँ चामुण्डा! आपकी जय हो। हे समस्त प्राणियों का कष्ट हरने वाली माता! आपकी जय हो। हे सर्वव्यापिनी कालरात्रि स्वरूपा देवी! आपको मेरा सादर प्रणाम है।

श्लोक ३

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ३॥

भावार्थ: हे मधु और कैटभ नामक असुरों को भगाने वाली, ब्रह्माजी को अभय-वरदान देने वाली माता! आपको नमन है। मुझे सुंदर स्वरूप, विजय और यश प्रदान कीजिए तथा मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक ४

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ४॥

भावार्थ: हे महिषासुर का समूल नाश करने वाली और अपने भक्तों को सुख देने वाली माता! आपको नमन है। मुझे रूप, विजय, यश प्रदान कीजिए और मेरे विरोधियों को शांत कीजिए।

श्लोक ५

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ५॥

भावार्थ: हे रक्तबीज असुर का वध करने वाली और चण्ड-मुण्ड नामक दैत्यों का विनाश करने वाली देवी! मुझे सुंदरता, विजय, यश प्रदान कीजिए और मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक ६

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ६॥

भावार्थ: हे शुम्भ, निशुम्भ और धूम्राक्ष जैसे अहंकारी दैत्यों का मर्दन करने वाली माता! मुझे रूप, विजय, यश दीजिए और मेरे द्वेषियों का नाश कीजिए।

श्लोक ७

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ७॥

भावार्थ: हे देवी! आपके चरण-युगल की समस्त देवगण वंदना करते हैं, और आप ही सबको सौभाग्य प्रदान करने वाली हैं। मुझे भी रूप, विजय, यश प्रदान कर मेरे शत्रुओं का शमन कीजिए।

श्लोक ८

अचिन्त्यरुपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ८॥

भावार्थ: हे अचिन्त्य और अद्भुत चरित्र वाली, समस्त शत्रुओं का विनाश करने वाली माता! मुझे सुंदर रूप, विजय, यश दीजिए और मेरे द्वेषियों का नाश कीजिए।

श्लोक ९

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ९॥

भावार्थ: हे चण्डिके! जो भक्त सदा श्रद्धा-भक्ति से आपको नमन करते हैं, उनके समस्त पाप और कष्ट आप हर लेती हैं। मुझे भी रूप, विजय, यश देकर मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १०

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १०॥

भावार्थ: हे चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति करते हैं, उनके सभी रोग और व्याधियां आप नष्ट कर देती हैं। मुझे रूप, विजय, यश प्रदान कर मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक ११

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ११॥

भावार्थ: हे चण्डिके! जो साधक निरंतर भक्तिभाव से इस लोक में आपकी अर्चना करते हैं, उन पर आपकी विशेष कृपा सदा बनी रहती है। मुझे भी रूप, विजय, यश देकर मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १२

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १२॥

भावार्थ: हे माता! मुझे सौभाग्य और उत्तम आरोग्य प्रदान कीजिए तथा परम सुख दीजिए। साथ ही मुझे रूप, विजय, यश देकर मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १३

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १३॥

भावार्थ: हे माता! मेरे शत्रुओं और द्वेषियों का नाश कीजिए तथा मुझे उत्तम बल-सामर्थ्य प्रदान कीजिए। मुझे रूप, विजय, यश दीजिए और विरोधियों का नाश कीजिए।

श्लोक १४

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १४॥

भावार्थ: हे देवी! मेरा कल्याण कीजिए और मुझे परम ऐश्वर्य-सम्पन्नता प्रदान कीजिए। मुझे रूप, विजय, यश देकर मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १५

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १५॥

भावार्थ: हे अम्बिके! देवताओं और असुरों — दोनों के मुकुटों के रत्न आपके चरणों में झुककर स्पर्श करते हैं, अर्थात सभी आपके चरणों में नतमस्तक हैं। मुझे भी रूप, विजय, यश प्रदान कीजिए तथा मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १६

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १६॥

भावार्थ: हे माता! मुझे विद्यावान, यशस्वी और लक्ष्मीवान (धन-वैभव संपन्न) बना दीजिए। मुझे रूप, विजय, यश दीजिए और मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १७

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १७॥

भावार्थ: हे चण्डिके! आप प्रचण्ड दैत्यों के अहंकार का नाश करने वाली हैं; मैं आपके चरणों में नतमस्तक हुँ। मुझे रूप, विजय, यश प्रदान कीजिए और मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १८

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १८॥

भावार्थ: हे चतुर्भुजा परमेश्वरी! स्वयं चार मुख वाले ब्रह्माजी भी आपकी स्तुति करते हैं। मुझे भी रूप, विजय, यश प्रदान कीजिए तथा मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक १९

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १९॥

भावार्थ: हे अम्बिके! भगवान श्रीकृष्ण भी सदा भक्तिभाव से आपकी स्तुति करते हैं। मुझे भी रूप, विजय, यश प्रदान कीजिए और मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक २०

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २०॥

भावार्थ: हे परमेश्वरी! हिमाचल-पुत्री पार्वती के स्वामी भगवान शिव भी सदा आपकी स्तुति करते हैं। मुझे रूप, विजय, यश दीजिए और मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक २१

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २१॥

भावार्थ: हे परमेश्वरी! इन्द्राणी के पति देवराज इन्द्र भी सद्भावपूर्वक आपकी पूजा करते हैं। मुझे भी रूप, विजय, यश प्रदान कीजिए और मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक २२

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २२॥

भावार्थ: हे देवी! आप अपनी प्रचण्ड भुजाओं के बल से दैत्यों के अहंकार का विनाश करने वाली हैं। मुझे रूप, विजय, यश दीजिए और मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक २३

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ २३॥

भावार्थ: हे अम्बिके! आप अपने भक्तजनों को अपार आनंद प्रदान करने वाली हैं। मुझे भी रूप, विजय, यश देकर मेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

श्लोक २४

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥ २४॥

भावार्थ: हे माता! मुझे मन के अनुकूल आचरण करने वाली, मनोहर और सुशील पत्नी प्रदान कीजिए, जो कुलीन हो और मुझे इस दुर्गम संसार-सागर से पार उतारने में सहायक बने।

श्लोक २५

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्॥ २५॥

भावार्थ: जो साधक पहले इस अर्गला स्तोत्र का पाठ करके तत्पश्चात दुर्गा सप्तशती के महास्तोत्र का पाठ करता है, उसे संपूर्ण सप्तशती-पाठ के समान ही समस्त संपदाओं और श्रेष्ठ वरदानों की प्राप्ति होती है।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **पाठ-क्रम:** यदि संपूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ करना हो, तो पहले देवी कवच, उसके तुरंत बाद अर्गला स्तोत्र, और फिर कीलक स्तोत्र पढ़कर ही सप्तशती के तेरह अध्यायों में प्रवेश करें। स्वतंत्र रूप से केवल अर्गला स्तोत्र का पाठ भी किया जा सकता है।
- **शुभ दिन एवं काल:** मंगलवार, शुक्रवार तथा शारदीय एवं चैत्र नवरात्रि के नौ दिन इस पाठ हेतु सर्वाधिक शुभ माने गए हैं। प्रातःकाल स्नान के पश्चात ब्रह्म मुहुर्त में पाठ करना सर्वोत्तम है।
- **दिशा एवं आसन:** पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके लाल अथवा पीले रंग के स्वच्छ आसन पर बैठें।
- **पूजन सामग्री:** माँ दुर्गा के चित्र या प्रतिमा के समक्ष घी का दीपक जलाएं, लाल पुष्प, अक्षत, कुमकुम और लाल चुनरी अर्पित करें।
- **उच्चारण:** संस्कृत श्लोकों का उच्चारण स्पष्ट, शुद्ध और श्रद्धापूर्वक करें; प्रत्येक श्लोक के अंत में आने वाले 'रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि' पद को विशेष भाव से दोहराएं, क्योंकि यही इस स्तोत्र का सार है।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **आत्मविश्वास व आकर्षक व्यक्तित्व की प्राप्ति:** *'रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि'* — इक्कीस बार दोहराई गई इस प्रार्थना से साधक के मुखमंडल पर तेज और आत्मविश्वास में स्पष्ट वृद्धि होती है।
- **हर कार्य में विजय एवं यश की प्राप्ति:** प्रत्येक श्लोक में 'जयं देहि' और 'यशो देहि' की पुनरावृत्ति परीक्षा, साक्षात्कार, न्यायालय अथवा प्रतिस्पर्धा जैसे हर क्षेत्र में विजय और सम्मान दिलाने वाली मानी गई है।
- **विद्या, आरोग्य और धन-समृद्धि:** *'विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु'* — यह श्लोक स्पष्ट रूप से विद्या, यश और लक्ष्मी तीनों की एक साथ प्राप्ति का वरदान मांगता है।
- **शत्रु-बाधा और नकारात्मकता का शमन:** *'द्विषो जहि'* का बारंबार उच्चारण शत्रुओं, ईर्ष्यालु व्यक्तियों तथा गुप्त शत्रुताओं से रक्षा करता है।
- **सुयोग्य एवं सुखी वैवाहिक जीवन:** *'पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्'* — विवाह में विलंब अथवा दांपत्य कलह की स्थिति में यह श्लोक विशेष रूप से सहायक माना जाता है।